Vol 5 Issue 12 Sep 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 12 | September - 2016

Review Of Research

गृहकार्य के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

देवेन्द्र सिंह चम्याल[1] , डॉं गोपाल सिंह नयाल[2]
[1]एम.एस–सी. रसायन विज्ञान, एम.ए. गणित, एम.ए. इतिहास, एम.एड., शोध छात्र एस.एस.जे. परिसर अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि.वि. नैनीताल.
[2]प्रोफेसर शिक्षा संकाय, एस.एस.जे. परिसर अल्मोड़ा, कुमाऊँ वि.वि. नैनीताल.

सारांश–

इस शोध कार्य में प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों व इन विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन क्षेत्र हेतु उत्तराखण्ड राज्य के अल्मोड़ा जिले को चुना गया। जनसंख्या हेतु अल्मोड़ा जिले के समस्त प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के समस्त अभिभावकों को सम्मिलित किया गया। साधन एवं समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए न्यादर्श हेतु 30 शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं 30 अभिभावकों को यादृच्छिक पद्धति द्वारा चयनित किया गया। वर्तमान शोध में सर्वे विधि का प्रयोग किया गया। गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित सूचना एकत्र करने हेतु एटीट्यूड टूवर्स होम वर्क स्केल का प्रयोग किया गया, जिसको डॉ. रम्भा जोशी एवं शोधार्थी कु० सरिता नेगी द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत किया गया। अभिवृत्ति मापनी द्वारा 60 शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों (पुरूष एवं महिलायें) से प्रदत्तों का संकलन किया गया। शोध कार्य में वर्णनात्मक सॉख्यिकी का प्रयोग किया, जिसमें से मध्यमान, मानक विचलन, टी–मान प्रयुक्त किये गये। गृहकार्य के प्रति अभिभावकों व शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति मापन हेतु टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया था। अभिवृत्ति तुलना एवं विवरण हेतु न्यादर्श को विभिन्न चरों जैसे– पुरूष (शिक्षक, अभिभावक), महिलायें (शिक्षिकायें, अभिभावक), लिंग, के आधार पर विभक्त किया गया था। अभिकतर शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं अभिभावकों की गृहकार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

मुख्य शब्द – गृहकार्य, अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, लिंग, अभिवृत्ति।

प्रस्तावना–

प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में गृहकार्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जब स्कूली शिक्षा जैसे– प्राथमिक से लेकर माध्यमिक शिक्षा की बात हो तो गृहकार्य का महत्व और भी अधिक हो जाता है। गृहकार्य उस कार्य को कहते है, जिसे विद्यार्थी शिक्षणोपरान्त घर पर पूरा करते हैं। इससे उनके द्वारा कक्षा में अर्जित ज्ञान एवं अनुभवों की पुष्टि भी होती हैं। गैंद एवं शर्मा के अनुसार ''शैक्षिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से गृहकार्य के बहुत महत्व हैं''। लारेन फॉक्स के अनुसार ''गृहकार्य बालकों के लिए चुनौतीपूर्ण होना चाहिए''। गृहकार्य दिया जाय या नहीं इस विषय में अध्यापक व अभिभावक चिंचित हैं, कि बच्चों को गृहकार्य दिया जाय या नहीं। गृहकार्य देते समय शिक्षक यह सोचने को मजबूर रहता है कि बच्चों को गृहकार्य देने से कहीं उसके स्वास्थ पर बुरा असर तो नहीं पड़ेगा। वहीं गृहकार्य दिये जाने से माता–पिता भी दुविधा में रहते हैं। वर्तमान शोधकार्य गृहकार्य के प्रति अध्यापक/अध्यापिकाओं तथा अभिभावकों की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिले में किया गया। प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य यह जानना है, कि वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में गृहकार्य के प्रति समाज के विभिन्न वर्ग मुख्य रूप से अभिभावक वर्ग तथा अध्यापक वर्ग, किस प्रकार के विचार रखते हैं, और शिक्षण प्रक्रिया में गृहकार्य की क्या भूमिका है? क्या गृहकार्य देने से छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पढ़ रहा है या नकारात्मक रूप से बोझ। वर्तमान युग में स्कूलों में दिये जा रहे गृहकार्य के विषय में जो सिद्धान्त दिये जा रहे हैं वे इस प्रकार है: समय का सदुपयोग, वैयक्तिक विभिन्नताओं के अनुरूप अध्ययन, अभ्यास कार्य के पर्याप्त अवसर, मौलिक चिन्तन का विकास, मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति, पाठ्यवस्तु की पुनरावृत्ति, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि, छात्र–छात्राओं को व्यस्त रखने के लिए गृहकार्य में अध्यापक छात्र–छात्राओं को घर के लिए कुछ कार्य देता है, जिसे छात्र–छात्रायें अपने घर में बैठकर करते हैं, जिसमें वे अपने अभिभावकों की भी सहायता लेते हैं, और अगले दिन स्कूल में दिखाते हैं। गृहकार्य कई प्रकार का हो सकता है! जैसे–लिखित एवं मौखिक। जिसमें लिखने का कार्य, पद्य को कण्ठस्थ करना, कविता, नाटक, गद्यांश, कहानी आदि के पात्रों का चरित्र याद करना, चित्र, मानचित्र आदि बनाना सम्मिलित होता है। सामान्य रूप से गृहकार्य की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है। ''गृहकार्य विद्यालय द्वारा छात्र–छात्राओं को दिया जाने वाला वह कार्य है, जो वे घर पर करते हैं''। इस शोधकार्य के

परिणाम शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा प्रशासकों हेतु उपयोगी हो सकते हैं।

समस्या कथन–

गृहकार्य के प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

उद्देश्य–

अल्मोड़ा जिले के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों व इन विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या– अल्मोड़ा जिले के समस्त प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक व अभिभावक।

न्यादर्ष व न्यादर्ष विधि– अल्मोड़ा जिले के 3 प्राथमिक एवं 4 माध्यमिक विद्यालयों के 30 शिक्षक/शिक्षिकाओं व 30 अभिभावकों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया, जिसमें पुरूष व महिलाएँ दोनों सम्मिलित हैं।

गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति मापनी– अभिवृत्ति के मापन हेतु डॉ. रम्भा जोशी एवं शोधार्थी कु० सरिता नेगी द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। अभिवृत्ति मापनी में 30 कथन सम्मिलित हैं। अभिवृत्ति मापनी द्वारा 3 प्राथमिक व 4 माध्यमिक विद्यालयों के 30 शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा 30 अभिभावकों से गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धी प्रदत्तों का संकलन किया गया।

प्रशासन एवं कार्य विधि– अभिवृत्ति मापनी को 60 शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों को वितरित किया गया था। शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों ने प्रत्येक कथन का उत्तर दिया। न्यादर्शों ने अपने उत्तर सहमत/असहमत के आधार पर दिये। शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों को अभिवृत्ति मापनी भरने से पहले स्पष्ट निर्देश दिये गए। कहीं अस्पष्ट होने पर न्यादर्श को शोधकर्ता द्वारा स्पष्टीकरण किया गया था।

प्रदत्तों का सॉख्यिकीय विष्लेशण– विश्लेषण हेतु विवरणात्मक सॉख्यिकी का प्रयोग किया गया। शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति मापनी में सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मूल्य की गणना की गयी।

शोध परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या– वर्तमान अध्ययन में 30 शिक्षक/शिक्षिकायें (50%) तथा 30 अभिभावक (50%) न्यादर्श हेतु चुने गये थे। अभिवृत्ति मापनी हेतु न्यादर्श को विभिन्न चरों जैसे– लिंग, शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा अभिभावकों में बांटा गया। अधिकतर सहभागी छात्र/छात्राओं को गृहकार्य देने के पक्ष में थे। गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित आकड़ों का विश्लेषण निम्न प्रकार किया गया था।

तालिका संख्या 1

लिंग के आधार पर गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
पुरूष	30	24.00	4.72	1.55	सार्थक नहीं
महिलायें	30	23.00	4.38		

स्वतन्त्रता के अंश = 58 सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर t. मान सार्थक नहीं ।

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट है कि पुरूष एवं महिलाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। इसका कारण यह हो सकता है कि आज महिला एवं पुरूष अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति समान रुप से जागरूक थे।

तालिका संख्या 2
अध्यापिकाओं एवं गैर–अध्यापिकाओं का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
अध्यापिकायें	15	25.00	3.76	0.89	सार्थक नहीं
गैर–अध्यापिकायें	15	23.60	4.76		

स्वतन्त्रता के अंश = 28 सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर t. मान सार्थक नहीं ।

उपरोक्त तालिका 2 से स्पष्ट है कि अध्यापिकाओं एवं गैर–अध्यापिकाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। इसका कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में गैर–अध्यापिकायें अपने बच्चों के गृहकार्य करने में पूरा सहयोग करती हैं, तथा अध्यापिकायें एवं गैर–अध्यापिकायें अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति समान रुप से जागरूक थे।

तालिका संख्या 3
अध्यापकों एवं पुरूष अभिभावकों का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
अध्यापक	15	25.6	3.60	3.73	सार्थक
पुरूष अभिभावक	15	21.00	2.87		

स्वतन्त्रता के अंश = 28 सार्थकता स्तर 0.01 पर t. मान सार्थक ।

उपरोक्त तालिका 3 में अंकित मानों से स्पष्ट है कि अध्यापकों एवं पुरूष अभिभावकों की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक अन्तर था। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापक शैक्षिक वातावरण में आये दिन होने वाले परिवर्तनों से पुरूष अभिभावकों की अपेक्षा अधिक जागरूक थे, क्योंकि वे बच्चों के शैक्षिक परिवेश से जुड़े होते हैं, जबकि पुरूष अभिभावक अन्य व्यवसायों में जुड़े होने के कारण बच्चों की शिक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते थे।

तालिका संख्या 4
अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
अध्यापक	15	25.00	3.76	0.39	सार्थक नहीं
अध्यापिकायें	15	26.6	3.60		

स्वतन्त्रता के अंश = 28 सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.01 पर t. मान सार्थक नहीं।

उपरोक्त तालिका 4 से स्पष्ट है कि अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। इसका कारण यह हो सकता है कि आज समाज में अध्यापक एवं अध्यापिकायें दोनों समान रूप से शिक्षा के प्रति जागरूक हैं, और बच्चों की शिक्षा पर लगभग समान रूप से रूचि रखते हैं।

विवेचना– वर्तमान अध्ययन में अधिकतर शिक्षक / शिक्षिकायें एवं अभिभावक बच्चों को गृहकार्य देने के पक्ष में थे। उनकी गृहकार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी। जब मध्यमान की गणना की गयी थी, तब पुरूषों, महिलाओं, अध्यापक, पुरूष अभिभावक, अध्यापिकाओं, गैर–अध्यापिकाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर था। गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में ऑशिक अन्तर, प्रतिभागियों का गृहकार्य के प्रति ज्ञान तथा उनके शैक्षणिक योग्यता, शैक्षणिक अनुभव, आयु में अन्तर के कारण था। t.मूल्य के आधार पर पुरूष एवं महिलाओं, अध्यापिकाओं एवं गैर–अध्यापिकाओं, अध्यापिकाओं तथा अध्यापकों की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर नहीं था, जबकि अध्यापकों एवं पुरूष अभिभावकों की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर था, गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति शिक्षकों, शिक्षिकाओं को बच्चों को स्कूल से गृहकार्य देने में तथा अभिभावकों को घर में बच्चों के गृहकार्य को देखने तथा गृहकार्य कराने में मद्दगार होगा।

निष्कर्ष– स्कूल के छात्र–छात्राओं को गृहकार्य देना स्कूली शिक्षा का एक मुख्य भाग है। जो विषय स्कूल की कक्षाओं में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाते हैं, उस ज्ञान से सम्बन्धित बच्चों को अपने घर हेतु कार्य दिया जाता है, जिसे बच्चे खुद या अपने अभिभावकों की सहायता से पूरा करके अगले दिन स्कूल में अपने शिक्षकों को दिखाते हैं। पुरूष तथा महिलाओं का गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जिसका कारण यह हो सकता है कि दोनों पुरूष एवं महिला अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति समान रूप से जागरूक हैं। अध्यापिकाओं एवं गैर–अध्यापिकाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमान में ऑशिक रूप से अन्तर पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है, कि अध्यापिकायें महिला अभिभावकों की अपेक्षा छात्र–छात्राओं की शिक्षा से ज्यादा जुड़ी होती हैं। अध्यापकों एवं पुरूष अभिभावकों की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। इसका कारण यह हो सकता है कि अध्यापक शैक्षिक माहौल में आये दिन होने वाले परिवर्तनों से पुरूष अभिभावकों की अपेक्षा अधिक जागरूक हैं, क्योंकि वे बच्चों के परिवेश से जुड़े होते हैं। पुरूष अभिभावक अन्य व्यवसायों में जुड़े होने के कारण बच्चों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते हैं। अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की गृहकार्य के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, इसका कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में अध्यापक एवं अध्यापिकायें प्रत्येक क्षेत्र में समान हैं। अध्यापक व अध्यापिकायें दोनों समान रूप से शिक्षा के प्रति जागरूक हैं, और बच्चों की शिक्षा पर लगभग समान रूचि रखते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.नेगी, सरिता (1996) गृहकार्य के प्रति अध्यापकों और अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, कु. वि. वि. नैनीताल।

2.Buch, M.B. (1974). A survey of Research in Education. Baroda: Center of Advance Study in Education, M. S. University.

4.Buch, M.B. (1978). Second Survey of Research in Education. Baroda: Society for Educational Research and Development , M. S. University,

5.Buch, M.B. (1978). Third survey of Research in Education. New Delhi: National Council of Education Research and Training.

6.Jaiswal, S.R.(1985). Principles of Education. Luckcow: Kendra Prakashan.

7.Pandey, R.S. (1983). Principles of Education. Agra: Ravi Mudranalaya.

8.Ross, C.C. (1953). Measurement in Today`s. New-Yorks: Prentice Hall.

Website :

www.google.com

www.sodhganga.infilibnet.ac.in

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org